• बाल कविताएं...

अंगद जैसा पैर जमा...

'अ' अनार का बोला था।
'आ' म पेड़ से तोड़ा था।
'इ' मली सच में खट्टी है।
'ई' ख बहुत ही मिट्ठी है।
'उ' ल्लू बैठ डाल पर।
'ऊ' न रखा रूमाल पर।
'ए' ड़ी फट गई धूप में।
'ऐ' नक गिर गई कूप में।
'ओ' खल में मत रखना सिर।
'औ' रत अभी गई है घर।
'अं' गद जैसा पैर जमा।
'अ:' अ: कर फिर चिल्ला।

■ प्रभुदयाल श्रीवास्तव

अंगद जैसा पैर जमा...

अंतराल
बूंद बूंद से गागर
भरती होगी
लोगों की
अपनी तो सदा
खाली ही नजर आती है...
दरअसल
इतना लम्बा है यहां
बूंदों का अंतराल
कि जब तक
दूसरी आये
पहली दम तोड़ देती है...!

■ सुरेश विमल

• चुटकुले...

टीटू – स्टेशन जाने का कितना लोगे?
रिक्शावाला – 50
टीटू– 20 ले लो...
रिक्शावाला – 20 में कौन ले जाएगा?
टीटू– तुम पीछे बैठो हम ले जाएंगे।

मम्मी : पेपर कैसा था?
बेटा : पतला सा था, सफेद रंग का।
मम्मी : मेरा मतलब है कि पेपर कैसा हुआ?
बेटा : फिफ्टी–फिफ्टी।
मम्मी : मैं समझी नहीं?
बेटा : जो पेपर मे लिखा था वह मेरी समझ में नहीं आया। लेकिन मैंने जो कापी में लिखा है, वह जांचने वाले की समझ में नहीं आएगा।

• जानकारी...

दुनिया की सबसे महंगी शर्ट

ब्रांड और महंगे कपड़े पहनने के तो आप भी शौकीन होंगे? लेकिन क्या आपने कभी ऐसा सोचा है कि दुनिया की सबसे महंगी शर्ट कौन सी है। आज हम ऐसे शख्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसे लेकर दावा किया जाता है कि ये शख्स दुनिया की सबसे महंगी शर्ट पहनता है और इसकी कीमत इतनी है कि कई घर तक खरीदी जा सकती है। इस व्यक्ति का नाम है पंकज पारेख। उन्हें 'द मैन विथ द गोल्डन शर्ट' के तौर पर भी जाना जाता है। पंकज की शर्ट अकेले ही कई घरों को खरीदने के लिए काफी है।

ये महाराष्ट्र के निवासी हैं, जो एक बिजनेसमैन हैं। पंकज पारेख दुनिया की सबसे महंगी शर्ट के मालिक हैं। यह शर्ट पहनकर वह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज करा चुके हैं। यह शर्ट सोने की धातु की बनी हुई बताई जाती है, जिसमें सोने का वजन 4.1 किलोग्राम है। अब इस हिसाब से इसकी कीमत का अंदाजा लगाया जाए तो इसकी कीमत 2 करोड़ रुपये से भी ज्यादा होगी। 1 अगस्त 2014 को इस शर्ट की कीमत 98,35,099 रुपये थी।

पंकज पारेख की लोकप्रियता का सफर विलासिता की दुनिया से बहुत दूर शुरू हुआ। कम उम्र में ही उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और गारमेट फैब्रिक बिजनेस में कदम रखा। इसी कारोबार से पंकज की किस्मत चमकी। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपनी व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ पारेख ने शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के साथ जुड़कर राजनीति में भी कदम रखा।

पारेख ने अपने अनोखे शौक से इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। उनकी सुनहरी कमीज की दुनिया भर में चर्चा है। इस कमीज ने उन्हें इंटरनेशनल लेवल पर ख्याति दिलाई है। आज इन्हें लोग 'द मैन विथ द गोल्डन शर्ट' के तौर पर भी जानते हैं।

• गोनू झा

कंजूस राजा को नसीहत

अंग देश के राजा में उदारता थी, लेकिन युवराज अपने पिता के ठीक विपरीत प्रवृत्ति के थे। हद से ज्यादा मितव्ययी। राजा के जीवनकाल में ही युवराज की कंजूसी की कथाएँ पूरे प्रदेश में मशहूर हो चुकी थीं।

राजा ने युवराज को बहुत समझाया कि प्रजा–पालन के लिए उदारता, करुणा, सहानुभूति आदि की भी जरूरत होती है। इन गुणों को राजा का आभूषण माना जाता है। परम्परा से चली आ रही रीतियों का निर्वाह भी राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है...

मिथिला नरेश के दरबार में गोनू झा के बुद्धिकौशल और वाक्चातुर्य का जो जादू चल रहा था उसकी कीर्ति मिथिलांचल के आस-पास के क्षेत्रों में भी फैल चुकी थी। मिथिला के पड़ोसी राज्य अंग देश के राजा ने राज्योत्सव के कई अवसरों पर गोनू झा को विशेष रूप से आमंत्रित किया था तथा उन्हें पुरस्कार-अलंकरण आदि से सम्मानित किया था।

अंग देश के राजा में उदारता थी, लेकिन युवराज अपने पिता के ठीक विपरीत प्रवृत्ति के थे। हद से ज्यादा मितव्ययी। राजा के जीवनकाल में ही युवराज की कंजूसी की कथाएँ पूरे प्रदेश में मशहूर हो चुकी थीं। राजा ने युवराज को बहुत समझाया कि प्रजा-पालन के लिए उदारता, करुणा, सहानुभूति आदि की भी जरूरत होती है। इन गुणों को राजा का आभूषण माना जाता है। परम्परा से चली आ रही रीतियों का निर्वाह भी राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। ब्राह्मण, चारण आदि को राज्याश्रय मिलना चाहिए। कलाकारों और साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य की ओर से प्रतियोगिताओं का आयोजन और पुरस्कारों की व्यवस्था राजधर्म है। खिलाड़ियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए भी राजकोष का उपयोग किया जाना चाहिए। जैसे सैनिकों को तरोताजा बनाए रखने के लिए प्रतिदिन उसकी कवायद पर राजकोष से व्यय किया जाता है, वैसे ही खिलाड़ियों और कलाकारों के लिए रंगशालाओं के निर्माण और उनके रख-रखाव की व्यवस्था करना राजधर्म है। मगर युवराज को अपने पिता की ये बातें प्रभावित नहीं करतीं। उसे लगता कि इस तरह के आयोजनों से धन और समय दोनों का अपव्यय होता है। चारण और ब्राह्मण तो युवराज को मिथ्याभाषी और लोलुप लगते थे। यदि राजा का भय नहीं होता तो वह अपने महल में चारण और ब्राह्मणों के प्रवेश पर भी प्रतिबंध लगा देता।

एक बार अंग देश के राजा बीमार पड़े। राज वैद्य ने अपने अनुभव से समझ लिया कि राजा अब बचने वाले नहीं हैं। उचित औषधि राजा को देकर उसने महामंत्री को परामर्श दिया कि युवराज के राज्याभिषेक की व्यवस्था कराएँ।

महामंत्री समझ गए कि राजा अब स्वस्थ नहीं हो सकेंगे। राज्य ज्योतिषी से परामर्श कर युवराज के राज्याभिषेक के लिए शुभ मुहूर्त और शुभ तिथि निर्धारित की गई। इस व्यवस्था के बाद राज वैद्य ने राजा को पूर्णविश्राम में रहने तथा राज्य संचालन की जिम्मेदारी पुत्र को सौंप देने की सलाह दी।

वार्द्धक्य के कारण राजा भी अब राज-काज से मुक्त होना चाहते थे, ऊपर से बीमारी ने उन्हें अशक्त कर रखा था। राजवैद्य की सलाह उन्हें पसन्द आई। निर्धारित तिथि को शुभ मुहूर्त में युवराज का राज्याभिषेक हुआ। राजा ने अपने पुत्र को स्वयं राज सिंहासन पर बैठाया और विश्राम करने के लिए अपने कक्ष में चले गए।

युवराज अपने पिता की बीमारी से दुखी था। अपने पिता की हालत से व्यथित युवराज को राजा बनने से कोई प्रसन्नता नहीं हुई। राज सिंहासन पर बैठे नए राजा के स्तुति गान के लिए चारण आए और नए राजा को आशीष देने ब्राह्मण मगर राजा ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। चारण स्तुति गान और ब्राह्मण मंत्रोच्चार करने के बाद नए राजा की ओर आशा-भरी दृष्टि से देखते हुए अपने स्थान पर खड़े रहे, मगर नए राजा ने उनकी ओर देखा तक नहीं।

महामंत्री ने राजा का ध्यान जब चारण और ब्राह्मणों की ओर आकर्षित किया तो नए राजा ने कहा, 'महामंत्री जी! मेरे पिता मरणासन्न हैं। ऐसे राज-काज सँभालना मेरा दायित्व था, इसलिए यह मेरे लिए कोई प्रसन्नता की बात नहीं। राजगद्दी मुझे मिलनी ही थी, सो मिली। नया क्या हुआ? अब से मेरे दरबार में इस तरह के 'याचकों' का प्रवेश वर्जित है। राज-काज इनकी स्तुति और मंत्रोच्चार से नहीं, राजनीतिक कौशल से चलता है।

-जारी

• रोचक...

पहाड़ और पहाड़ी

पहाड़ और पहाड़ी दिखने में एक ही तरह के लगते हैं। इसके चलते लोगों को दोनों में कम अंतर समझ आता है। हालांकि बता दें कि पहाड़ और पहाड़ी में एक ऐसा अंतर होता है जो साफ नजर आता है और वो होता है साइज। पहाड़ आमतौर पर चट्टानों से बना होता है। जबकि पहाड़ी में चट्टानों की संख्या कम होती है। जहां पहाड़ी आमतौर पर छोटी होती है और इसका एरिया कम होता है। जबकि पहाड़ विशाल एरिया में फैले होते हैं। इन्हें इसकी रेंज से पहचाना जाता है. साथ ही पहाड़ो में अक्सर ऊंचाई में काफी अंतर होता है और चोटियां ऊंची होती हैं। पहाड़ियां या तो भ्रंश या अपरदन के कारण बनती हैं। वहीं पहाड़ की चोटी नुकीली होती है, जहां किसी का रहना आसान नहीं होता। जबकि पहाड़ी की चोटी में इतनी जगह होती है कि लोग वहां जाकर बस भी सकते हैं। वहां पहाड़ आमतौर पर पहाड़ी से ज्यादा ऊंचा माना जाता है।

• नदी में हीरा...

बुंदेलखंड के पन्ना जिले में अजयगढ़ तहसील से निकलने वाली रुन्झ नदी है। ग्रामीण लोगों का कहना है कि बरसात के मौसम में यह नदी सैलाब के साथ हीरे बहाकर भी लाती है। इसलिए हर साल नदी के किनारों पर बरसात के मौसम में लोग कंकड़ पत्थर में हीरा तलाशते हुए नजर आते हैं। आखिरी बार 2 साल पहले एक किसान को यहां पर 72 कैरेट का हीरा मिला था। जिसकी खबर फैलने पर हजारों की संख्या में लोग हीरा तलाशने के लिए पहुंच गए थे। वन विभाग ने इस इलाके में ग्रामीणों के आने पर प्रतिबंध लगाया हुआ है।